मनसा सेवा - 72

Types of Vairagya

अव्यक्त बापदादा :- (18/01/1999)

➳ _ ➳ यह 14 वर्ष जो तपस्या की, यह बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल था। बापदादा ने अभी साधन बहुत दिये हैं, साधनों की अभी कोई कमी नहीं है लेकिन होते हुए बेहद का वैराग्य हो। विश्व की आत्माओं के कल्याण के प्रति भी इस समय इस विधि की आवश्यकता है क्योंकि चारों ओर इच्छायें बढ़ रही हैं, इच्छाओं के वश आत्मायें परेशान हैं, चाहे पदमपति भी हैं लेकिन इच्छाओं से वह भी परेशान हैं। **वायुमण्डल में आत्माओं की परेशानी का विशेष कारण यह हद की इच्छायें हैं।**

➳ _ ➳ अब आप अपने बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा उन आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति फैलाओ। आपके वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल के बिना आत्मायें सुखी, शान्त बन नहीं सकती, परेशानी से छूट नहीं सकती। आप वृक्ष की जड़ हैं, ब्राह्मणों का स्थान वृक्ष में कहाँ दिखाया है? जड़ में दिखाया है ना! तो आप फाउण्डेशन हैं, आपकी लहर विश्व में फैलेगी इसलिए बापदादा विशेष साकार में ब्रह्मा बाप समान बनने की विधि, वैराग्य वृत्ति की तरफ विशेष अटेन्शन दिला रहा है।

➢➢ वैराग्य

➳ _ ➳ जहाँ राग का अभाव है वह अवस्था वैराग है

➳ _ ➳ राग-द्वेष, आकर्षण-विकर्षण से परे की अवस्था वो वैराग है

➳ _ ➳ योगी का मन स्थिर हो जाता है

➳ _ ➳ वैराग्य के प्रकार -

→ मंद वैराग्य

- **इससे अध्यात्म में उन्नति नहीं हो सकती**
- वह अवस्था जिसमें दोनों ही चीजें है-
  - **भगवान तो चाहिए पर संसार को भी पकडे हुए है**

→ तीव्र वैराग्य

- इसमें प्रयत्न है- मन जहाँ-जहाँ भाग रहा उसको खींचकर वापस स्थिर करना
- इन्द्रियों को वश में किया लेकिन राग और द्वेष मन में छिपा हुआ है

→ तीव्रतर वैराग्य

- इसमें मन भी स्थिर हो गया है
- **संसार के किसी भी आकर्षण करने वाली वस्तु से वह अप्रभावित रहता है**

➳ _ ➳ वैराग के और दो प्रकार-

→ परा

- योगी की सर्वोच्च अवस्था

- कोई भी रंग उस पर प्रभाव नहीं डालता
- यहाँ का मान-अपमान, व्यक्ति, वस्तुएं, सम्पति, टाइटल, पोजीशन कुछ भी नहीं

→ अपरा

- मंद वैराग्य की स्थिति

➳ _ ➳ वैराग के और दो प्रकार-

→ शंख वैराग्य

- शमशानी वैराग्य या मरकट वैराग्य
- थोड़े समय का वैराग्य
  - **जब ज्ञानियों के संग में जाते हैं, मधुबन में आते हैं, सत्संग में आते हैं, तब वैराग्य आता है**
  - जब मृत्यु को देखते हैं, बीमारी को देखते हैं तो क्षणिक वैराग्य आता है
  - **संसार को देखने के बाद संसार के प्रति राग उत्पन्न होता है**

→ शाश्वत वैराग्य

- एक बार छोड़ दिया तो छोड़ दिया
- **महान आत्माएं एक बार प्रतिज्ञा करती हैं**
- चाहे कुछ भी हो पीछे मुडकर देखते नहीं
- दो विकल्प- भगवान या संसार
  - **भगवान को चुन लिया तो चुन लिया, कोई और संकल्प नहीं**
  - **भीष्म प्रतिज्ञा पुरुषार्थ के प्रति, भीषण प्रतिज्ञा पवित्रता के प्रति**
  - अपवित्रता में अब कोई रूचि नहीं
  - **वैराग्य का पथ चुना है, भगवान साथी है और कोई नहीं चाहिए**

➢➢ वैराग्य की Stages-

➳ _ ➳ 1. वह अवस्था जिसमें प्रयत्न है

→ मन भाग रहा है वस्तुओं की तरफ, उसे खींच-खींचकर लाया जा रहा है

➳ _ ➳ 2. जिसमें मन अस्थिर है पर इन्द्रियां थोड़ी-थोड़ी वश में हो गई है

→ अभ्यास बहुत समय का है इसलिए इन्द्रियों पर कण्ट्रोल है

- आँखों को पता है की क्या देखना, क्या नहीं देखना है
- **कानों को ये समझ आ गया है की क्या सुनना है, क्या नहीं सुनना है**

- मुख को ये पता चल गया है की कौन सी बातें नहीं करनी है जो वैराग्य को मन में जन्म देती है

  - कभी-कभी जो चीज करनी है सीधा कर देना है, संकल्प करते नहीं बैठना है

  - पहले कर्म, फिर बोल, संकल्प, फिर संस्कार बन जाएगा, उल्टा चक्र

  - **कर्म रिपीट होते-होते बोल, फिर संकल्प और संस्कार**

  - **संस्कारों से मुक्ति की भी यही विधि है- कई बार संकल्प करते पर होते नहीं, इसलिए सीधा कर्म कर देना, और एक्शन रिपीट करते रहना**

  - वैराग्य नहीं है पर जबरदस्ती बोलते रहना, वैराग्य की बातें करते रहना

➳ _ ➳ 3. जिसमें मन भी स्थिर हो गया है

→ मन और इन्द्रियाँ भी वश में है

→ परन्तु कभी कभी मन में राग और द्वेष प्रकट हो जाता है

➳ _ ➳ 4. परा वैराग्य की अवस्था जिसमें यहाँ की कोई भी चीज प्रभावित नहीं करती

➢➢ वैराग्य उत्पन्न करने के लिए क्या करना है ?

➳ _ ➳ दोष दृष्टि

→ **राग में डूबे हुए व्यक्तियों को देखना की उनकी क्या हालत होती है**

→ जन्म में दुःख, मृत्यु में दुःख, जरा में दुःख, व्याधि में दुःख को देखना

- हदों की इच्छाएं ही सर्व दुखों का कारण है

  - **साक्षी होकर देखना की -हम जब दुखों में, राग में, मोह में, व्यक्तियों के प्रभाव में, गुणों में डूबे हुए थे तो हमारे चित्त की क्या अवस्था थी**

  - महात्मा बुद्ध ने दोष देखे तो वैराग्य आ गया

  - **जब तक हम ये सोचते हैं की जो कर रहा हूँ ये ठीक है तब तक वैराग्य नहीं आता**

  - **जब ये पता चल जाय ये ठीक नहीं है तब वैराग आता है**

➳ _ ➳ वैराग्य लाने के दो मार्ग हैं-

→ 1. **सबसे बड़ा मार्ग- भगवान के प्रेम में ऐसे डूब जाओ की संसार स्वतः ही छूट जाय**

→ 2. (i) संसार के दोष देखना, संसार की इच्छाओं का मार्ग, क्या गति हुई है उनकी उसका अध्ययन करना

→ (ii) वैरागियों, योगियों, तपस्वियों का संग, सत्संग,

- जहाँ ज्ञान की चर्चा, परमात्म प्रेम की चर्चा हो रही है, जहाँ अध्ययन हो रहा है, तपस्या हो रही है, तपस्या का चिन्तन चल रहा है

- **जब तक वैराग्य नहीं अध्यात्म में उन्नति हो नहीं सकती, चाहे कोई कुछ भी कर ले**

- **ऐसा वैराग्य लाना है, सेल्फ चेकिंग करनी है की किस राग ने, आसक्ति ने मुझे पकड़ा है**

- अगर व्यक्ति में मोह है तो उसके दोष देखना है, क्योंकि मैं आसक्त हूँ

- व्यक्ति में कितने भी गुण हो, वो कितना भी स्नेही, सहयोगी हो पर गुण देने वाला दाता कौन है

- एक बाप दूसरा ना कोई, एक ही से सर्व सम्बन्ध

- **अलौकिक सम्बन्ध भी पेपर है इससे भी वैराग्य लाना है**